दुनिया को इस्लाम के अमली नमूने की जरूरत हे

मुफती अहमद खानपुरी दब

उर्दू किताब महमुदुल मवाईज से इस मज़मून का लिप्यान्तर किया गया है

दुनिया तो नमूना चाहती हे आज हम जो नमूना दुनिया के सामने पेश कर रहे हे उसको देख कर दुनिया ये समझती हे की हमारे यही अखलाक इस्लामी अखलाक हे, हमारे यही समाज इस्लामी समाज हे, हमारे यही मामलात इस्लामी मामलात हे, और इन सब को देख कर वो ये समजते हे के इस्लाम एसी खराब तालीम देता हे. गोया हम लोग उनके इस्लाम मे दाखिल होने मे रूकावट बन रहे हे आज लोग इस्लाम मे दाखिल होना चाहते हे और हम लोग इस्लाम के दरवाजे पर खडे होकर अपने मामलात और अखलाक के जरीये और अपना रहन-सहन बताकर उनको रोक रहे हे लोग ये सोचते हे के यही इस्लामी अखलाक हे अगर इसीका नाम इस्लामी अखलाक हे तो कौन इसको कबूल करेगा.

अमली इस्लाम का वास्तविक नमूना चाहिये- एक माहिर इकोनोमिस्ट हे और वो बदा अच्छा तिजारत का प्रोजेक्ट तय्यार करके किसी इन्वेस्टर के पास जाये और उसके सामने सारा फलसफा पेशकर दे ये करोगे तो इतना नफा

होगा वो पहले ये सवाल करेगा के इसका कोई अमली नमूना हे जब तक उसके सामने अमली नमूना नही पेशकिया जाये वो एक पेसा भी नही डालेगा आज हम अपनी तरफ से इस्लाम की दावत लोगो के सामने कितनी ही पेशकारे और उसकी खुबिया बयान करे लेकिन लोग तो अमली नमूना चाहते हे आज हमसे कोई ये सवाल करे के दुनिया मे कोई जगह एसी हे जहा का निजाम इस्लाम के बताये हुवे निजाम के मुताबिक चलता हो तो ये गेरेन्टी हे के हमारे पास एसा एक भी नमूना नही हे.

हमारे यही अखलाक सोसायटी और मामलात हे और इन सब को देखकर वो ये समझते हे के इस्लाम एसी ही खराब तालीम देता हे गोया हम लोगो के इस्लाम मे दाखिल होने के रस्ते रूकावट बन रही हे हम इस्लाम के साथ मुहब्बत का दवा करते हे लेकिन इस्लामी मआशरत का नमूना पेश करने से मेहरूम हे.

मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी (रह) न्यू मुस्लिम थे और रूस के शाही महल मे रहते थे वहा उनको स्टालिन लिनन और दुसरे लीडरो के साथ गुफ्तगू का मोका मिलता था. एक दिन मौलाना ने स्टालिन लिनन के सामने इस्लाम का पूरा निजाम पेश किया और दावत पेशकी की तुम लोग इस्लाम

कबूल करलो और इस्लामी निजाम को अपने मुल्क मे नाफिज करो कम्युनिजम के बजह इस्लाम का निजाम तुम्हारे मकसद को अच्छी तरह पूरा कर देगा सब बाते सुनने के बाद स्टालिन लिनन ने मौलाना से एक सवाल किया जो कुछ आप ने बताया बिलकुल सही हे लेकिन इसका कोई नमूना दुनिया मे मोजूद हे मौलाना के पास इसका कोई जवाब नही था.

मेरे एक दोस्त आलिम भी हे और ताजीर भी हे उन्होने कहा के एक हिंदु जीसने इस्लाम का खूब मुताला किया था उसने मेरे सामने यही सवाल किया के इस्लामी तालीमात सिर्फ एक फलसफा हे ये अमली चीज नही हे उसने ये दावे के साथ कहा के ये सब अमली तौर नामुम्किन हे अगर उसको तारीख मे दिखाए भी तो उसका एतेबार कौन करेगा जरूरत इस बात की हे हम अपनी मुआशरात एसा दुरूस्त करले की हमारी मुआशरात अखलाक और मामलात को देख कर लोग इस्लाम कबूल करने को तैयार हो जाये.

सबक फिर पढ सदाकत का

दूसरी कोमो को अपने अखलाक मामलात और मुआशरात के जरिये दावत दे जबान से कुछ केहने की जरूरत ही नही रहेगी जबान से केहना इतना मुफीद नही अगरचे वो भी

फाइदे से खली नही लेकिन हमारे अमल से जो दावत पोहचेगी वो एसी पुख्ता होगी के वो सर झुकाने पर मजबूर होगे, अगर हम इन सिफत को अपने अंदर पेदा करले तो दोबारा वही चीज हासिल हो सकती हे वरना अल्लाह की तरफ से जो भी मामला हो हम उसके मुस्ताहिक करार दिये जायेगे अल्लाह हम को तौफीक अता फरमाये के दीन के सरे अज्जा और तमाम शोबो को हम अपनी जींदगी के अंदर उतारने की कोशिश करे.

दीने इस्लाम ही कामिल हे

हुजूरﷺ जब हज्जतुल विदा मे तशरीफ ले गये और मैदाने अराफात मे अरफा के दिन जब हुजूरﷺ जबले रहमत (एक पहाड का नाम हे) के करीब रूके हुवे थे उस वकत ये आयत आपﷺ पर नाजील हुवी थी. तर्जुमा आज मेने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया अपनी नेमत और अपना एहसान तुम पर पूरा कर दिया और तुम्हारे लिये दीने इस्लाम के दीन होने पर मे राझी हो गया. (माइदह/३)

दीने इस्लाम की हर चीज कामिल ही कामिल हे- हुजूरﷺ पर जो दीन नाजील किया जा रहा था इस आयत के जरीये उसके पूरा किये जाने की खुश-खबरी दी गइ हे हुजूरﷺ जीस दीन को लेकर दुनिया मे आये थे और हुजूरﷺ अल्लाह

की तरफ से जो पैगाम अल्लाह की मखलूक और इन्सानो तक पोहचाया हे और जीस शरीयत के साथ आपﷺ को भेजा गया था उसमे इन्सानो के लिये हिदायत मौजूद हे. इस्लामी शरीयत खुबीयो और अच्छायो का मजमुआ हे इसकी हर चीज खूबी और कमल की हेसियत रखती हे.

"जमीयत- जीसमे सब कुछ आ गया हो."

जमीयते हिदायत- दीने इस्लाम और पाकीजा शरीयत की इन सब खुबीयो मेसे एक खूबी जमीयत हे इसमे हिदायत के एतेबार से देखा जाये तो इस शरीयत मे इन्सान के लिये जींदगी के तमाम हिस्सो के बारे मे हिदायते दि गयी हे इन्सान की जींदगी का कोइ हिस्सा एसा नही हे जीसके बारे मे दीने इस्लाम मे कोइ हिदायत मौजूद नहो इस्लाम के सिवा दुसरे मजहबो के हालात और उसकी कमियो को अगर आप जानते होतो आप को मालूम होगा के इन मजहबो मे इन्सानी जींदगी के बोहोत सरे हिस्से अधूरे हे और उनसब के बारे मे उन मजहबो मे कोइ हिदायत और रेहनुमाइ नही हे.

दुनिया के दुसरे मजहबो मे आप देखो और उनको पढे तो जींदगी के सरे हिस्सेको उन मजहबो मे घेराव नही किया गया हे इस्लाम ही एक एसा मजहब हे के इन्सानी जींदगी

के सरे हिस्से इसमे आ गये हे चाहे वो लोगो के दरमियान हो, या अकेले मे हो, चाहे दुनिया हो, या आखिरत, सरदारी हो, या सियासत, चाहे मिलकर रहने का तरीका हो या रहन-सहन, इबादत हो या आदत हो. बलकी इन्सान के सारे हालात के मुताल्लिक मजहबे इस्लाम मे हिदायते मौजूद हे इन्सान के उपर जो अलग-अलग हालात आते हे मसलन तंदरूस्ती होया बीमारी सफर की हालत या वतन मे रहने की हालत हो चाहे आमिर हो या गरीब हो खुशी की हालत या गम की हालत हो मौत हो या जींदगी हो सोने के मुताल्लिक हो या जागने के मुताल्लिक हो कोइ भी हालत और कैफियत एसी नही हे जीसके मुताल्लिक हिदायते मौजूद नहो हर चीज की डिटेल के साथ इस्लाम ने हिदायते बयानकी हे गोया एक एसा जामे मजहब हे के इसमे इन्सानी जींदगी के किसी हिस्से को अधूरा नही छोडा किसी हिस्से के बारे मे सवाल नही हो सकता हे के इसके मुताल्लिक इस्लाम मे कोइ हिदायत और रेहनुमायी मौजूद नहो.

जमीयते अहकाम- जमीयते हिदायत के साथ दूसरी खुबी जमियते एहकाम कि हे जींदगी के हिस्सो के मुताल्लीक जो हुकम दिये गये हे उनमे हर हर हुकम अपनी जगह जमे
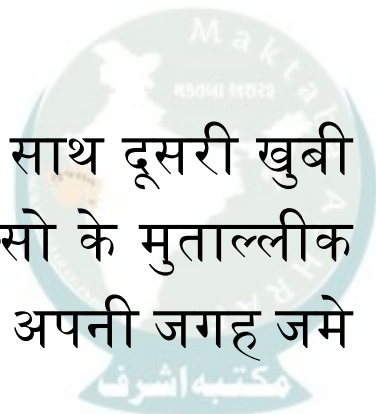
हे इस्मे किसी तरह कात छत कि कोइ गुंजाइश और जरूरत नही हे किसीभी एक चिज के मुताल्लीक इस्लामका पुरा हुकम अगर आप देखे और इस्को शुरूसे अखिरतक पढे तो इस्मे आप को एतेदाल (दर्मीयानापन) नजर आयेग न इस्मे कमी हे न ज्यदती किसी एक हिस्से कि तरफ जुकाव नही, ये एक एसी खूबी हे जो हर चीज को बाकी रखने वाली हे जीस मे एतेदाल होता हे वो चीज बाकी रेहती हे कमी ज्यादती वाली चीज बाकी नही रेहती तो गोया इस्लाम के तमाम अहकाम जामे हे, फिर इसके नतीजो को देखा जाये और उसके फायदो को गिना जाये तो भी इस्लाम का हुकम जामे हे यानि जो हुकम दिया गया हे वो दुनिया के एतेबार से भी फायदेमंद हे और आखिरत के एतेबार से भी उसमे फायदा मौजूद हे इस्लाम के अहकाम पर अमल करने मे दीनी और दुनयावी दोनो एतेबार से फायदा हे.

इस्लाम की जमीयत और ना समज लोगो के एतराज-

खुलसा ये के अल्लाह ने जो शरीयत हमे हुजूरﷺ के जरिये दी हे वो बडी जामे हे और ये जमीयत ही बाज नासमज लोगो के लिये एतराज की वजह बन गई.

हजरत सलमान फारसी (रदी) से रिवायत हे वो फरमाते हे

बाज लोगो ने मुझ से मजाक के तौर पर सवाल किया के तुम्हारे नबीﷺ तुमको हर चीज सिखाते यह तक के तुम को इस्तीन्जा करने का तरीका भी बताते हे ये भी कोइ बात हुवी. हजरत सलमान फारसी (रदी) इस सवाल पर गुस्सा होने के बजाये जवाब मे फरमाया जीहा हमारे नबीﷺ हम को हर हर चीज बतलाते हे इस सिलसिले मे हमे ये हिदायत दी गइ हे जब हम इस्तिन्जे के लिये बेठे तो किब्ला रूख होकर न बेठे राइट हाथ इस्तेमाल ना करे तीन पत्थर से कमसे इस्तिन्जा ना करे और ये भी बतलाया के हम गोबर और हड्डीयो को इस्तेमाल ना करे (इब्ने माजा/316)

दीन के मुख्तलिफ शोबे

1. अकाइद- आदमी अपने अकीदे को दुरूस्त करले नबियो के मुताल्लिक क्या अकीदा होना चाहिये हुजूरﷺ के मुताल्लिक क्या अकीदा होना चाहिये फरिश्तो के मुताल्लिक क्या अकीदा होना चाहिये नबियो पर उतरने वाली किताबो के मुताल्लिक क्या अकीदा होना चाहिये कियामत के मुताल्लिक, जन्नत, व जहन्नम, के मुताल्लिक क्या अकीदा होना चाहिये. जब तक आदमी का अकीदा दुरूस्त नही होगा वहा तक वो मोमिन नही हो सकता अकीदे पर तो इमान मोकुफ हे अकीदे के मुताल्लिक हाल

ये हे के हम मुसलमानो को इसकी बोहोत मामूली सी जानकारी होती हे मिसाल के तौर पर अल्लाह को एक मानते हे हुज़ूरﷺ अल्लाह के रसूल और आखरी पेगम्बर मानते हे कियामत के आने को बरहक समझते हे फरिश्तो को मानते हे बचपन मे ये सब पढाया जाता हे ईसलीये ये चीजे जेहनो मे होती हे मगर इसके बाद तफ्सीली अकाइद के मुताल्लिक तो कुछ जानते ही नही हे अकाइद का बाब इतना अहम हे के उसमे जर्रा बराबर फर्क आजाये तो आदमी इमान से निकल जाता हे आज मुसलमानो का हाल ये हे के बोलने मे एसे एसे अलफाज अपनी जबान से निकलते हे के उनके बारे किताबो मे लिखा हे की एसा केहने की वजह से आदमी इमान से निकल जाता हे.

2. इबादात- आज कल हर कोई अपने आप को दीनदार समझता हे और कहता हे के मुझे दीन से ताल्लुक हे और वो यु समझता हे सिर्फ इबादते अदा कर लेने का नाम दीन हे इसके अलावा जो वाजीब और नवाफिल हे माली और जानी उसे दीन से कोई लेना देना नही आज कल दीनदार होने के लिये इबादत वाले शोबे के अमाल को काफी समझते हे अब इन इबादतो मे हमारा क्या हाल हे हम नमाझ किस अंदाज से पढते हे जमात का कितना

एहतेमाम करते हे वकत पर कितनी नमाझे पढते हे हम अपने दिल से पूछ सकते हे हर शख्स अपने गरेबान मे मूह डालकर सोच सकता हे के मे इन सब चीजो का कितना एहतेमाम करता हु इसके लिये कितनी कोशिश करता हु.

3. अखलाक- तीसरा शोबा माहसीने अखलाक का हे (अच्छे अखलाक) दीन मे मुख्तलिफ अखलाक और महासिन की बाकायदा तालीम दिगयी हे तवज्जु ईन्कीसारी तकदीर पर राजी रहना वगेरा को इखतीयार करने की तरगीब दिगयी हे और अपने आप को तकब्बुर हसद कीना और गीबत से दूर रखने और बचने की तालीम दिगयी हे ये सब चीजे बद अखलाकी से ताल्लुक रखने वाली हे.

4. मामलात- इसके बाद मामलात का नंबर हे हम किसी के साथ खरीदो फरोख्त करते हे या किसी से मकान किराये पर लिया या दिया, किसी को मजदूरी पर रखा, किसी के वहा मजदूरी की ये सब मामलात से ताल्लुक रखने वाली चीझे हे इनके मुताल्लिक तो हमये समझते हे के ये तो दीन का कोई शोबा हे ही नही हालाके मसला ये हे के आदमी अगर तिजारत करता हे तो तिजारत से मुताल्लिक जितने अहकाम हे और जीनसे इसको वास्ता पडता हे उन सब

मसाइल को जानना सबसे पेहले जरूरी हे पेहले उसको जानो फिर तिजारत करो इससे पेहले तिजारत करना शरीयतन जायज नही.

हजरत उमर (रदी) के दोरे खिलाफत मे जब कोई आदमी तिजारत के लिये बाजार मे दाखिल होता तो सबसे पेहले ये सवाल किया जाता के खरीदो फरोख्त के मसाइल मालूम हे अगर मालूम ना होतो तिजारत के लिये लाईसन नही मिलता था उसको कहा जाता के पेहले तिजारत के मसाइल जाकर मालूम करो ये इस्लाम की बडी खूबी हे इसी तरह बच्चा जब बालिग होता हे तो बालिग होते ही उस पर नमाज रोजे फर्ज हो जाता हे तो बालिग होने से पेहले इसके लिये जरूरी हे के नमाज रोजे के मसाइल मालूम करे.

5. मुआशरात (समाज) यानि हुकुक की अदायगी- एक और शोबा हे मुआशरात का यानि एक दुसरे के हुकुक बाप के उपर बेटे के क्या हुकुक हे उसकी तरबियत कैसे होनी चाहिये, बेटे के उपर मां-बाप के क्या हुकुक हे, मिया-बीवी के हुकुक भाइ-बहनो के हुकुक दोस्तो और रिश्तेदारो के हुकुक ये सब चीजे मुआशरात के अंदर आती हे इनको जानलो और उसके मुताबिक अमल करना निहायत जरूरी

हे. कोई आदमी निकाह करना चाहता हे तो निकाह के मुताल्लिक एहकाम का इल्म हासिल करना जरूरी हे के बीवी के क्या हुकुक हे वगेरा आज कल निकाह से पेहले इन सब चीजो की खूब तय्यारीया होती हे के दूल्हे के कपडे कैसे हे लडकी के जेवरात कैसे हे दहेज का सामान क्या हे दावत कितने आदमी, बारात मे कौन जायेगा दावत मे क्या खिलाया जायेगा वगेरा वगेरा ये सब एहतेराम किये जाते हे लेकिन दूल्हा-दुल्हन को किसी को इस्लाम की बात का एहसास नही होता हे के निकाह की वजह से एक दुसरे के हुकुक जो उनके उपर वाजीब होते हे उसको मालूम कर लेना चाहिये इस्लाम इसको जरूरी करार देता हे इसके बगेर निकाह की इजाजत नही हे लेकिन कितने मुस्लमान इस बातसे वाकिफ हे.

दीन के तमाम शोबो पर अमल जरूरी हे- अगर हम मुस्लमान बन्ना चाहता हे तो सिर्फ इबादत को अंजाम देकर मुकम्मल मुस्लमान नही बन सकते इस्लाम के मुकम्मल पांच शोबे बतलाये गये हे उन तमाम पर अमल जरूरी हे अगर सिर्फ इबादत वाला पहलु ही लिये बेठे हे तो हम 20% इस्लाम पर अमल करते हे और 20% की वजह से आदमी मुकम्मल मुस्लमान नही बन सकता आज

जरूरत इस बात की हे के जहा हम इबादतो का एहतेमाम करते हे वह हम अकीदा, इबादात, अखलाक, मामलात, और समाज, का भी एहतेमाम करे आज हमारा समाज इतना बिगड चूका हे के उस बिगड की वजह से दुसरे मजहब वाले भी इस्लाम से नफरत करने लगे हे जरूरत इस बात की हे के हम इस्लामी बुनयादो पर अपनी समाज को दुरूस्त करे और ये समजे के समाज भी दीन का ही एक हिस्सा हे अगर हम अपने समाज को दुरूस्त कर लेगे तो हमे लोगो को जबानी दावत इस्लाम पेश करने की जरूरी नही हे हमारा समाज ही अमली दावत होगी और उसको देखकर लोग इस्लाम कुबूल कर लेगे. खुलासा ये हे के अखलाक और मुआशरात का जो रास्ता इस्लाम ने हमे अता किया हे इसको हम सब आज ही इखतीयार करले.

न्यू वर्ल्ड आर्डर के असरात

इस वकत पूरी दुनिया मे मुसलमानो पर चारो तरफ से हमले हो रहे हे इस्लाम की दुश्मनावत मे अमेरिका सबसे आगे हे और ये अमेरिका ने न्यू वर्ल्ड आर्डर की पलानीग खास इसलिये की हे के इस्लाम को इस दुनिया से मीता दिया जाये लेकिन अल्लाह की कुदरत हे के ये लोग इस्लाम को मितने के लिये जीतनी कोशिश कर रहे हे लोग उतने

ज्यादा इस्लाम की तरफ आ रहे हे बाज हजरात का ये केहना हे के न्यू वर्ल्ड आर्डर यहूदी वर्ल्ड आर्डर का एक हिस्सा हे आज से एक जमाना पेहले यहूदियो के दानिश्वर (ईन्टेलीजन) लोग जमा हुवे थे और उन्होने एक निजाम बनाया था जीस को प्रोटोकोल का नाम दिया था यहूदियो के दानिश्वरो और हुक्मरानो के तैयार किये हुवा प्रोटोकोल मे आइन्दा के लिये दुनिया पर अपना कब्जा जमाने के लिये जो उसूल बनाये गये थे उसमे ये भी था हमारे लिये जरूरी हे और बोहोत जरूरी हे के हम इस बात की कोशिश करके हर जगाह अखलाक खराब हो जाये ताके हम हर जगाह डोमिनेशन हासिल करले.

आज कल अमेरिका पर यहूदियो का डोमिनेशन हे जो समझदार और पढे लिखे लोग हे और अखबार से वाकिफ हे वो जानते हे ये कोम दुनिया मे बोहोत कम तादाद मे हे दुनिया मे जीतने अखबार, मीडिया हे सबपर इनका कब्जा हे वो जो नजरीये को चाहते हे उसको लोगो मे फैलते हे और लोगो की जहन साजी करते हे और इसी का एक हिस्सा ये भी हे के मुसलमानो के अखलाक को खराब किये जाये.

मुसलमानो के लिये हुस्ना व शराब का जाम- आज से एक मुद्दत पेहले इसाइ मिशनरियो के जीम्मेदार और उनके बडे

पोप सब आपस मे मिले और मश्वरा हुवा उसमे एक पोप ने मश्वरा दिया था के शराब का एक जाम और एक हसीन व जमील लडकी मिल्लते इस्लामिया के टुकडे-टुकडे करने मे वो असर दिखला सकती हे जो एक हजार टोपे नही दिखला सकती.

एश परस्ती समाज बुराइयो की जड- एक अच्छा अफसर जो रिशवत ना लेता हो अगर उसको एय्यासी मे डालदिया जाये और उसको एय्यासी की आदत लग जाये तो वो उसको हासिल करने के लिये कुछ भी करेगा आज तक उसके पास जीतने उसूल थे वो सब छोड देगा. आज कल स्कीम के तहत लोगो को टीवी वगेरा के जरिये एय्यासी के सामानो की जानकारी दिजाती हे और इन चीजो का इतना ज्यादा प्रोपेगंडा किया जाता हे के लोगो को अपनी लाइफ स्टाइल ज्यादा से ज्यादा हाइ फाइ करने की ख्वाहिश होती हे अब उसके पास इतने पेसे नही हे तो वो इसको हासिल करे ईसलीये वो गलत रास्ता इखतीयार करेगा लडकी हे तो वो अपने आप को बुराइ के लिये पेश करेगी मर्द हजरात चोरी, लूट, बद-दियानति का रास्ता इखतीयार करेगे जरूरत इस बात की हे के हम अपने अखलाक को दुरूस्त करे और एश परस्ती के आदि ना बने.

यहूद व नसारा की हसद- बोहोत से एहले किताब दिलसे इस बात की तमन्ना करते हे के तुम को इस्लाम से फेर कर कुफ्र मे लेजाये एहले किताब कौन हे? ये यहूद और नसारा हे लेकिन वो एसा क्यू करना कहते हे? वो लोग जानते हे इस्लाम मजहब बरहक हे लेकिन सिर्फ इसलिये के मुसलमानो के साथ हसद और दुश्मनी की वजह से वो एसा करते हे उनकी कोशिश उस जमाने मे भी थी और आज भी उनकी कोशिश का वो सिलसिला जारी हे इस्लाम से फिरना सिर्फ यही नही के आदमी कुफ्र इखतीयार करले बलके अगर इसके खयालात बदल जाये इसके मामलात मुआशरात अखलक इस्लाम के खिलाफ हो जाये तो ये मुआशराती अखलाकी मामलात के एतेबार से इस्लाम से हत गया हे अगर वो इबादत के एतेबार से इस्लाम पर भी हे.

उलटी हो गइ सब तदबीरे- दुनिया वालो मुसलमानो के साथ-साथ इस्लाम से नफरत पेदा करने के लिये कितनी कोशिशे कर रहे हे आप को मालूम होगा इस्लाम के निजामे तलाक के मुताल्लिक कितना प्रचार किया गया और इस्लाम के खिलाफ ये प्रचार बोहोत पहले से किया जा रहा हे के इस्लाम मे औरतो के लीये कोइ जगह नही हे

लेकिन इसके बाद भी इंग्लैंड और जर्मनी मे कसरत से औरते इस्लाम कबूल कर रही हे और जब उनसे सवाल किया गया के तुम को इस्लाम की कोन सी खूबी ने इस्लाम की तरफ माइल किया उन्होने यही जवाब दिया के इस्लाम मे औरतो के मुताल्लिक जो अहकाम हे वह औरत की फितरत के मुताबिक हे आज कल लोग इस्लाम के इन्ही अहकाम के जरये इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश करते हे लेकिन अल्लाह ने उसका ये असर जाहीर फरमाया के उलटा लोग इस्लाम मे दाखिल हो रहे हे.

अल्लाह की मोहलत

अल्लाह की मोहलत से फायदा उठाये- वतन मे जो मजहबी जझबात उभरे जाते हे वो हमारे लिये खेर ही खेर हे पिछले चंद सालो मे जो हालत पेश आये हम मेसे हर शख्स अपने मुस्तकबिल (फ्यूचर) से मायूस हो चुक्का था के इस मुल्क मे इस्लाम और मुसलमानो के लिये कोइ मुस्तकबिल नही हे अभी अल्लाह का दिया हुवा मोका हमारे पास बाकी हे हकीकत ये हे के हम ने बडी गलतिया की हे लेकिन अल्लाह की तरफसे हमे बार बार मोका दिया गया हे अब भी मोका हे अगर हम इस मोके का फायदा नही उठायेगे तो अल्लाह कुरान मे फरमाते हे **तर्जुमा-**

अगर तुम राहे हक से हटोगे और इस राह को इखतीयार नही करोगे और तमाम इस्लामी एहकाम को जींदगी मे नही उतरोगे तो अल्लाह इस मकसद को पूरा करने के लिये दूसरी कोम लायेगा और वो तुम्हारी तरह नही होगी अल्लाह की तरफ से ये चेलेन्ज पेहले से दिया जा चूका हे ये समज लीजीये अल्लाह के कुछ मखसूस बन्दे हे जीनकी दुआओ के सदके हमे और उम्मत को संभालने का मोका दिया जा रहा हे लेकिन कब तक? आप सोचिये एक बाप का कोइ बेटा नाफरमानी पर उतर आया और बाप सजा देने के लिये तैयार हे लेकिन रिश्तेदारों मेसे कोइ कहे के ये बेटा हे इस को जरा मोका दो तो वो कहेगा के तुम कहते हो तो मोका देता हु लेकिन फिर वो बारबार इसी गलती को दोहराएगा तो एक वकत आयेगा बाप कान पकडकर घरसे निकल देगा.

अल्लाह की किसी के साथ रिश्तेदारी नही- इसलिये सही बात ये हे के अभी हमको संभालने के मोके दीये जा रहे हे अगर हम अपने आपको अभी भी नही संभाला और दुरूस्त नही किया तो अल्लाह से किसीकी रिश्तेदारी नही हे हजरत साद बिन अबी वक्कास (रदी) को जब हजरत उमर (रदी) ने सिपेह सालार बनाकर भेजा था और मुसलमानो

का लस्कर दरयाए दजला को बगेर कश्तियो के पार कर गया तो उस वकत कहा था देखो अल्लाह हर एक के साथ उसके अमल के मुताबिक मामला करता हे अल्लाह की किसी के साथ रिश्तेदारी नही हे मालूम हुवा के जैसे अमल होगे अल्लाह की तरफ से वैसे ही मामले किये जायेगे अगर गेहू बोओगे तो गेहू और अगर कांटे बोओगे तो कांटे हाथ आएंगे फूल बोओगे तो फूल हाथो मे आ सकते हे कांटे बोकर हम फूल की उम्मीद नही कर सकते.

अल्लाह हम सबको तोफिक अता फरमाए के दीन के सरे अङ्झा और तमाम शोबो को हम अपनी जींदगी के अंदर उतरने की कोशिश करे (आमीन)